

ISSN - 2231 - 2749

NUMBER - 33

2019

**A PEER REVIEWED
JOURNAL
OF THE
MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD
SPECIAL ISSUE**



EDITORS

Prof. R. N. Shrivastava

Prof. Vandana Gupta

16. ब्रिटिश काल में जनआंदोलन में जैनों का योगदान : जबलपुर जिले के विशेष संदर्भ में डॉ. रंजना जैन	71
17. जबलपुर में गाँधी डॉ. आर.एन. श्रीवास्तव	76
18. चम्पारण सत्याग्रह - उचित समय पर उचित प्रयास डॉ. अनिल दुबे	80
19. बुन्देला विद्रोह के पूर्व बुन्देलखण्ड की राजनीतिक स्थिति डॉ. अंजलि दुबे	83
20. भारत में वन नीतियाँ एवं आदिवासियों के वन विशेषाधिकारों का हनन - औपनिवेशिक काल से वर्तमान तक अभिषेक अग्रवाल	87
21. बाल क्रांतिकारी और ब्रिटिश दमन चक्र डॉ. मुक्ति मिश्रा	93
22. चरण पादुका गोलीकांड बनाम जलियाँवाला बाग हत्याकांड डॉ. ज्योत्सना अग्रवाल	97
23. बघेलखण्ड में राष्ट्रीय जन-जागरण (1857 से 1947 ई. तक) डॉ. चित्रा आम्रवंशी	100
24. शौर्यता के प्रतीक - शंकर शाह व रघुनाथ शाह चौधरी शिवव्रत मोहन्ती	106
25. 1857 का विद्रोह मध्यप्रदेश के संदर्भ में प्रियंका पाण्डेय	114
26. जबलपुर में स्वतंत्रता आन्दोलन (सविनय अवज्ञा आन्दोलन) डॉ. शिवानी बर्मन	120
27. छिंदवाड़ा के महान स्वाधीनता सेनानी स्व. श्री बादल भोई सुदेश कुमार मेहरोलिया	122
28. 1857 की क्रान्ति एवं वीरांगनाएँ डॉ. प्रज्ञा अनुरागी	124
29. बुन्देलखण्ड का चरण पादुका गोली काण्ड और उसके सेनानी डॉ. पप्पी चौहान	128
30. सन् 1857 ई. की क्रान्ति में महिलाओं का योगदान मालवा अंचल के विशेष संदर्भ में डॉ. धीरेन्द्र	131
31. बुन्देलखण्ड की रियासतों में प्रजामण्डल की स्थापना प्रो. बी. के. श्रीवास्तव	136
32. मण्डला जिले में राष्ट्रीय आंदोलन की जनजागृति के प्रसार में पं. उमेश दत्त पाठक का योगदान डॉ. राहुल कुमार झारिया	145

बुन्देलखण्ड की रियासतों में प्रजामण्डल की स्थापना

प्रो. बी. के. श्रीवास्तव

अध्यक्ष - इतिहास विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ ही भारत में तेजी से राष्ट्रवादी भावनाओं का प्रसार हुआ। अंग्रेजों की सहयोगी रियासतों के राजा अपनी प्रजा के साथ निरंकुशता का व्यवहार करते थे। अतः रियासतों की जनता में भी स्वाधीनता की लहर जागृत हुई। यह जन असंतोष गवर्नर जनरल लार्ड लिटन के समय तेजी से उभरा। लिटन ने इसे दबाने हेतु रियासतों के राजाओं को अंग्रेजों के पक्ष में करने की नीति अपनाना आरंभ की।

अंग्रेजों द्वारा अब ऐसे प्रयास किए जाने लगे ताकि रियासतों के राजा उनके पक्ष में रहें। इसी क्रम में 1905 में भारत के प्रधान सेनापति लार्ड किचनर ने बुन्देलखण्ड में नौगाँव छावनी में मिलिट्री स्कूल (किचनर कॉलेज) आरंभ किया। इसके निम्न उद्देश्य थे -

- बुन्देलखण्ड की रियासतों के राजाओं एवं जागीरदारों के पुत्रों को सैन्य शिक्षा प्राप्त करने हेतु आकर्षित करना।
- बुन्देलखण्ड के राजाओं को ब्रिटिश प्रशासन एवं सैन्य व्यवस्था के नजदीक लाना।
- प्रशासन में उनका सक्रिय सहयोग प्राप्त करना।

1916 में श्रीमती एनीबीसेंट एवं बालगंगाधर तिलक ने होमरूल आन्दोलन चलाया, इससे ब्रिटिश सरकार चिन्तित हुई। अब देशी रियासतों को अपना पक्का सहयोगी बनाने के उद्देश्य से माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधारों में 'नरेन्द्र मण्डल' की स्थापना का सुझाव प्रस्तुत हुआ। इस योजना के तहत फरवरी 1921 में दिल्ली में नरेन्द्र मण्डल (चैम्बर ऑफ प्रिंसेस) की स्थापना हुई। इसमें 121 राजाओं ने सदस्यता ली। डॉ. काशी प्रसाद त्रिपाठी ने लिखा है कि नरेन्द्र मण्डल की स्थापना को लेकर प्रथम बैठक 1 नवम्बर 1916 को हुई थी। इसमें 40 राजाओं ने भाग लिया था। इसमें बुन्देलखण्ड की ओरछा एवं दतिया रियासत के राजा भी सम्मिलित हुए थे।¹

देशी राज्यों एवं ब्रिटिश सत्ता के बीच घनिष्टता लाने के उद्देश्य से 1927 में बटलर कमेटी का गठन किया गया। बटलर कमेटी की सिफारिशों के अनुसार ही 1935 में नवीन ढंग पर भारतीय संघ की रचना की गई। इस संघ का निर्माण ब्रिटिश राज्य एवं देशी रियासतों को मिला कर किया गया था।

बुन्देलखण्ड की रियासतों में राष्ट्रीय चेतना

भारतीय रियासतों पर धीरे-धीरे ब्रिटिश सरकार अपना शिकंजा कसती जा रही थी। अधिकांश रियासतों के राजा कमजोर थे। आपसी वैमनस्य के कारण वे एक जुट न होकर अलग-थलग थे। इसी कारण उन पर ब्रिटिश शिकंजा कस रहा था। उन्हें ब्रिटिश सत्ता की सर्वोच्चता कबूल करना पड़ी। ब्रिटिश सरकार से बदले में इन्हें आन्तरिक एवं बाह्य खतरों से सुरक्षा की गारंटी तो मिली, मगर इनके आन्तरिक मामलों में ब्रिटिश